|  |
| --- |
| 21. Januar 2024 |
| **03. Sonntag im Jahreskreis B** |
| Erste Lesung: Jona 3,1-5.10; Zweite Lesung: 1 Kor 7,29-31; Evangelium: Mk 1,14-20 |
|  |  |  |
| Eröffnung: | GL 381, 1+2 | Dein Lob, Herr, ruft der Himmel aus |
|  | GL 551, 1+2 | Nun singt ein neues Lied dem Herren |
|  |  |  |
| Kyrie: | GL 163, 4 | Herr Jesus |
|  |  |  |
| Gloria: | GL 173, 1+2 | Gloria. |
|  |  |  |
| Antwortgesang: | Ps 25,4-9 |
|  | Kehrvers:  |  |
|  | GL 657, 3 | Dein Erbarmen, o Herr |
|  | oder Psalmenlied: |
|  | GL 142, 2 | Herr, zeige uns die Wege dein |
|  |  |  |
|  |  |
| Halleluja-Ruf: | GL 174, 6 |  |
|  | Vers: |  |
|  | *Das Reich Gottes ist nahe.* |
|  | *Kehrt um und glaubt an das Evangelium!* |
|  |  |  |
| Credo: | GL 792 | Ich glaube, Herr, it Zuversicht |
|  |  |  |
| Gabenbereitung: | GL146, 1-4 | Du rufst uns, Herr, an deinen Tisch |
|  | GL 456 | Herr, du bist mein Leben |
|  | GL 477 | Gott ruft sein Volk zusammen |
|  |  |  |
| Sanctus: | GL 198 | Heilig |
|  |  |  |
| Agnus Dei: | GL 203 | O Lamm Gottes |
|  |  |  |
| Danksagung:  | GL 275, 1+4 | Selig, wem Christus |
|  | GL 378 | Brot, das die Hoffnung nährt |
|  |  |  |
| Schluss: | GL 464, 1+2+4 | Gott liebt diese Welt |
|  | GL 462 | Jesus Christ, you are my life |
|  | GL 489, 1-3 | Lasst uns loben |